सं. थो. वि./फरौदाबाद/72-85/19317.--चूंकि ह्रियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० डी. छी. फोरजिंग्ज, प्रा. लि., फरीदाबाद के अभिक श्री गर्बेन्द्र साहना तया उत्तरे प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद विश्वित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यात विवाद की न्यायतिर्गय हेतु विदिंग्ट करता वांछतीय समझे हैं ;

इसलिये, श्रव, श्री द्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हुए ह्रिय णा के राज्यवाल इस के द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं 5415-3-अम-68/15254; दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ऋधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरबरी, 1958 द्वारा उसस प्रविनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित अभ न्यायालय, फरीदाबाद, को बिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ग्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धक तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रयचा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री गजेन्द्र सांह्नी की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है?

## दिनांक 30 अप्रैले, 1985

सं. घ्रो.वि./गुड़गावां/4-85/19390.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) सचित्र, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, पण्डीगढ़, (2) कार्यकारा ग्रामियता, ग्रोप्रेशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़ के श्रीमिक श्री राम श्रमार तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई घीचोणिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसति र, अब, औशोति ह विश्व मिनितन, 1917, की बादा 10 की उपबादा (1) के सम्ब (ग) द्वादा प्रश्नात की गई शिवतों का अयोग करते हुने हिरिसमा के राज्यसन इस के द्वादा सरकारी मिनित्र में 65415-3-अप-68/15254, विनांक 20 जून, 1968, के सामपढ़त हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वादा असति मिनित्र की वादा 7 के मेबीन गिन्त अन न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्मय के लिए निदिश्व करते हैं जो कि उनत अबन्धकों तथा अमिकों के बीच या तो विवादमस्त या विवाद से सुसंगत मामला है :---

क्या भी राम अवतार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राईत का हुकदार है ?

## दिनांक 2 मई, 1985

खं॰मो॰वि॰/यमुनानगर/34-85/20029.--वृद्धि हरियाणा के राज्यसल की राय है हि नं० शंहर इन्डरमाईजिन, नैतीको कलोनी, जगाधरी, के व्यक्ति श्री लाल देव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानले में कोई भीबोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यनात विवाद की न्यायिन गैय हेतु निर्दिश्य करना वांछनीय सनसर्वे हैं;

इसिन्, मन, मोबोलिक विवाद मिनियम, 1947 की धारा 10 की उरवारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्ति वो छ। प्रयोग करते हुए, हरियागा के राज्याज इसके द्वारा सरकारी भविश्वना सं० 3(44)84-3अम, दिनांक 18 छ कि, 1934 हारा उन्त भिनियम की धारा 7 के मधीन गठित अम न्यायालय, अन्वाला, को विवादयस्त मा उससे सम्बन्धित वीचे लिखा मामला म्यायनिर्णय के लिय निविष्ट करसे हैं; जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगढ भयव संबंधित मामला है:--

क्या भी लाल देव की सेवाफों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?